

जग सारा इक कागज नैया
 पार लगा दो वंशी बजैया ॥२॥
 पार लगा दो वंशी बजैया.

पार लगा दो वंशी बजैया

जग सारा-----

विष का प्याला पी गई मीरा

लेकर नाम तुम्हारा sss

ओ कन्हैया sss लेकर नाम तुम्हारा

उस प्याले में देखा तुमको

निकली अँसुअन धारा

ओ कन्हैया ssss निकली अँसुअन धारा

पार लगा दो जीवन नैया

आजा - आजा मेरे कन्हैया ॥२॥

जग सारा-----

रो-रो दोपद तुम्हें पुकारें

कहाँ दिपे वनवारी

ओ कन्हैया... कहाँ दिपे वनवारी

बीच सभा में, देख ले आके

जा रही लाज हमारी

ओ कन्हैया... जा रही लाज हमारी

देर करो न मेरे भैया. ॥२॥

कृष्ण कन्हैया - कृष्ण कन्हैया

सारा जग-----

काम-क्रोध-मद-मोह-लोभ में

फस रहा जीव विचारा

ओ कन्हैया... फस रहा जीव विचारा

आज "श्रीबाबा श्री" नहीं कोई जग में

तुमको जानन हारा... हरि को जानन हारा

ओ कन्हैया... हरि को जानन हारा

तुम हो मेरे नाव खिचैया ॥२॥

बंशी बजैया - वंशी बजैया

सारा जग-----